# सौभाग्य के लिए महिलाएं रखती है वट सावित्री व्रत

सौभाग्य के लिए महिलाएं रखतीं है वट सावित्री व्रत गुरुवार 15 मई 2018 को वट सावित्री व्रत मनाया जाएगा। धार्मिक ग्रंथो के अनुसार वट सावित्री व्रत ज्येष्ठ माह में कृष्ण पक्ष की अमावस्या को मनाया जाता है। यह व्रत महिलाएं अपने सौभाग्य की कामना एवम संतान प्राप्ति के लिए करती है। भारतीय संस्कृति में वट सावित्री व्रत आदर्श नारीत्व का प्रतीक माना गया है। विभिन्न धार्मिक पुराणो में इस व्रत के विषय में विस्तार पूर्वक बताया गया है। वट सावित्री पूजा महत्व।

पीपल की भांति वट वृक्ष का भी विशेष महत्व है। इस व्रत को करने से सौभाग्य व संतान की प्राप्ति होती है। धार्मिक मान्यता अनुसार वट वृक्ष में ब्रह्माए विष्णु एवम महेश का वास होता है। वट वृक्ष के नीचे बैठकर पूजनए व्रत कथा सुनने से समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण होती है।

**पूजन विधि**

वट सावित्री व्रत के दिन माँ सावित्री के साथ यम देव की भी पूजा करना चाहिए। सावित्री ने इस तिथि को मृतक पति को धर्मराज यम से पुनः जीवित करने का वर प्राप्त की थी। जिससे सावित्री का पति सत्यवान जीवित हो उठा था। इस दिन व्रती को मिटटी से निर्मित माँ सावित्री तथा यमराज की प्रतिमा का पूजन विधि.विधान पूर्वक करना चाहिए। वट सावित्री की पूजा वट वृक्ष के नीचे करना चाहिए। माँ सावित्री की पूजा रोलीए केसरए सिंदूरए धुप.चन्दन आदि से करे एवम सती सावित्री की कथा सुनें।

स्कन्द पुराण के अनुसारए भद्र देश के राजा अश्वपति की कोई संतान न थी जिस कारण राजा अश्वपति सदैव कुण्ठित रहते थे। तत्पश्चात उन्होंने अपने राज्य पुरोहित से इस संदर्भ में कोई माध्यम बताने का अनुरोध किया। राज्य पुरोहित ने कहाए हे राजन आप सावित्री देवी की पूजा करें। माँ सावित्री प्रसन्न होकर आपको मनोवांछित वर अवश्य देंगी। राजा अश्वपति ने संतान प्राप्ति के लिए कई वर्षो तक तपस्या की जिससे माँ सावित्री अति प्रसन्न हुई। माँ सावित्री ने प्रकट होकर उन्हें पुत्री प्राप्ति का वर दिया। तदोपरांत राजा अश्वपति के घर में पुत्री का जन्म हुआ। राजा अश्वपति ने माँ सावित्री के नाम पर अपनी पुत्री का भी नाम सावित्री रखा।

समय के साथ सावित्री बड़ी होती गई। सावित्री सब गुणों से सम्पन्न कन्या थी। जिस कारण राजा अश्वपति को सावित्री के योग्य वर नही मिल पा रहा था। कुछ समय पश्चात राजा ने सावित्री को स्वंय वर तलाशने के लिए कहा। सावित्री अपने वर की तलाश में एक वन में जा पहुंची जहां उसकी भेंट साल्व देश के राजा दयुम्त्सेन से होती है।

दयुम्त्सेन का राज छिन्न गया था जिस कारण साल्व का राजा अपने परिवार सहित उसी वन में रहते थे। सावित्री ने जब राजा के पुत्र सत्यवान को देखा तो सावित्री ने उन्हें पति रूप में वरण कर लिया। यह बात जब महर्षि नारद को ज्ञात हुई तो उन्होंने इस सदर्भ में राजा अश्वपति को बताया कि आपकी कन्या को वर ढूंढने में भारी भूल हुई है।

राजकुमार सत्यवान गुणवान तथा धर्मात्मा है परन्तु सत्यवान अल्पायु है एवम एक वर्ष पश्चात इनकी मृत्यु हो जाएगी। जिससे राजा अश्वपति पुनः चिंतित हो गए। उन्होंने अपनी बेटी सावित्री को समझाया कि कोई और वर चुन लो। तत्पश्चात सावित्री बोलीए पिता जी आर्य कन्याए अपने पति का वरण सिर्फएक बार करती है तथा कन्यादान भी एक बार ही किया जाता है।

तत्पश्चात राजा अश्वपति ने दोनों को परिणय सूत्र में बांध दिया। सावित्री ससुराल पहुंच कर सास.ससुर की सेवा में रत हो गयी। समय के साथ वो दिन भी आ गया जिस दिन राजकुमार की मृत्यु विधि.विधान के अंतर्गत सुनिश्चित थी। सत्यवान उस दिन भी जंगल में लकड़ी काटने चला गया। सावित्री भी अपने सास.ससुर से आज्ञा लेकर अपने पति के पास पहुंच गयी।

सत्यवान वृक्ष पर चढ़ कर जैसे ही लकड़ी काटने लगाए तभी सत्यवान का सर चकराने लगाए वह तुरंत वृक्ष से नीचे उतर आया। उस समय सावित्री ने उसे अपने गोद में सुला लियाए तभी यम आकार सत्यवान के जीवन को लेकर जाने लगा तब सावित्री भी उसके पीछे.पीछे चल दी। यम ने मुड़कर सावित्री को जाने को कहाए सावित्री फिर भी चलती रही।

तत्पश्चात यम ने कहा तुम्हे क्या चाहिएघ् मनवांछित फल ले लो परन्तु सत्यवान को जाने दो। सावित्री ने अपने सास.ससुर की काया तथा राज पाट मांग ली। यम ने कहा ऐसा ही होगा। फिर यम आगे बढ़ा तो सावित्री भी पीछे.पीछे चलती रही। यम ने फिर मुड़कर सावित्री को जाने के लिए कहा। सावित्री बोली मैं साथ में जाउंगी। यम ने कहाए तुम्हे और क्या चाहिए घ्

सावित्री बोली मुझे सौ पुत्रो की माँ बनना है। यम ने कहा तथास्तु ! फिर भी सावित्री यम के पीछे चलती रही। यम ने कहा अब क्या चाहिए तुम्हारे कहे अनुसार मैंने तुम्हे वर दे दिया अब लौट जाओ। सावित्री बोली हे यम देव पत्नी व्रता के कर्तव्य का निर्वाह कर रही हूँ। आपने तो सौ पुत्रो का माँ बनने का वरदान दे दिया परन्तु मैं पति के बिना माँ कैसे बनूँगी।

## चन्द्रमा से बनने वाले अशुभ योग को इस प्रकार करें शांत

चन्द्रमा पृथ्वी पर सबसे ज्यादा असर डालने वाला ग्रह है। इसका सीधा असर व्यक्ति के मन और संस्कारों पर पड़ता है। इसलिए चन्द्रमा से बनने वाले योग बेहद महत्वपूर्ण होते हैं। चन्द्रमा से तीन प्रकार के शुभ योग बनते हैं। अनफाए सुनफा और दुरधरा और एक अशुभ योग भी बनता है जिसका नाम है केमद्रुम।

कुंडली में केमद्रुम योग हो तो बहुत सारे शुभ योग निष्फल हो जाते हैं। यह व्यक्ति को मानसिक पीड़ा और दरिद्रता देता है।

कैसे बनता है केमद्रुम योग

चन्द्रमा के दोनों तरफकोई ग्रह न हो। तथा उस पर किसी ग्रह की दृष्टि न हो तोए केमद्रुम योग बन जाता है।

ऐसी दशा में व्यक्ति को मानसिक रोग या मानसिक पीड़ा का सामना करना पड़ता है।

धन हानि

व्यक्ति को दरिद्रता का सामना भी करना पड़ता है। धन को लेकर खूब उतार चढ़ाव होते हैं। केमद्रुम योग कर्कए वृश्चिक और मीन लग्न में ज्यादा खराब होता है।

केमद्रुम योग तब होता है खत्म

जब चन्द्रमा से अष्टम या छठवें भाव में शुभ ग्रह हों। जब कुंडली में शुभ ग्रह मजबूत हों। जब केंद्र में केवल शुभ ग्रह हों।जब बृहस्पति केंद्र में हो। जब शुक्ल पक्ष में रात्रि का या कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो।

केमद्रुम योग से बचने के उपाय

नित्य प्रातः माता के चरण स्पर्श करें।अगर माँ न हों तो माता सामान स्त्री के चरण स्पर्श करें।सोमवार को दूध ए चावल या चीनी का दान करें।शरीर पर चांदी जरूर धारण करें।नित्य सायं ष्ठ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमःष् का जाप करें। हर महीने में एक बार शिवलिंग पर सफेद चंदन लगाएं और जल चढ़ाएं। शिव जी की भक्ति से केमद्रुम योग निश्चित भंग हो जाता है।

शनि न्याय के देवता हैं जो व्यक्ति को उसके शुभ अशुभ कर्मों के अनुसार फल प्रदान करते हैं। शनि देव बिना कारण के पीड़ा नहीं देते। व्यक्ति के गलत कार्यों के फलस्वरूप उसे पीड़ा भोगनी पड़ती है। शनिदेव इस पीड़ा देने के माध्यम मात्र बनते हैं।

## शुभ अशुभ कर्मो के अनुसार फल देते हैं शनि

**शनि के प्रभाव**

व्यक्ति को स्नायु तंत्र और लम्बी बीमारी की समस्या हो जाती है। व्यक्ति के हर कार्यों में विलम्ब और रुकावट आती है।

रोजगार और नौकरी के मामले में कठिनाई आती है। जीवन में अकेलेपन का सामना करना पड़ता है।

**लोहे का छल्ला दिलाता है राहत**

शनिदेव का आधिपत्य लौह धातु पर है। इसलिए लोहे का छल्ला शनि देव की शक्तियों को नियंत्रित करने के काम आता है।

यह छल्ला सामान्य लोहे का नहीं होता यह घोड़े की नाल या नाव की कील का बना हुआ होता है। घोड़े के पैरों की घिसी हुआ नाल या लहरों से टकरायी हुयी नाव की कील एक विशेष चुम्बकीय प्रभाव रखती है। अतः इसका बना हुआ छल्ला शनि की पीड़ा को काफी हद तक कम कर देता है। जब भी इसकी अंगूठी बनवाएं इसे आग में न तपाये

**कैसे धारण करें**

घोड़े की नाल या नाव की कील की बनी हुयी अंगूठी शनिवार के अलावा किसी भी दिन लाएं। इसको शनिवार को सुबह सरसों के तेल में डुबोकर रख दें। शाम को इसे निकाल कर जल से धोकर शुद्ध कर लें। अब इसे अपने सामने रखकर शं शनैश्चराय नमः का जाप करें। इसके बाद इसे मध्यमा अंगुली में धारण कर लें। शनिदेव की पीड़ा का असर लगभग समाप्त हो जाएगा।

# रोजगार और शादी में

## बाधा आ रही तो करें ये उपाय

रोजगार और शादी में बाधा आ रही हो तो इसके लिए भी उपाय हैं। यहां तक कि आपके पास कुंडली ना हो तो भी नाम राशि से इसके लिए उपाय किये जा सकते हैं। नाम राशि से भी भाग्य बनता बिगड़ता है। नाम का भी जीवन पर असर पड़ता है। सभी को अच्छी पढ़ाई धन और अच्छी शादी चाहिए तो नाम राशि अनुसार अपना अपना उपाय करके शुक्र को बलवान करें। शुक्र अपनी वृषभ राशि में है इसलिए 7 दिन तक शुक्र का उपाय करें।

**मेष राशि** - अ एल ए च

नाम राशि अनुसार पढाई रोजगार और शादी के लिए क्या उपाय करें।

7 दिन गुड़ .जल दूध की मिठाई लक्ष्मी जी को चढ़ाए और दही का तिलक लगाए।

**वृषभ राशि** - इ ए उ एए ए ओ ए व

पढ़ाई रोजगार और शादी के लिए कपूर पानी में डालकर नहाए व शिवलिंग पर गुलाब फूल चढ़ाएं।

**मिथुन राशि** - क ए छ ए ह

नाम राशि अनुसार पढाई एरोजगार और शादी के लिए जल में गुलाबजल डालकर नहाए और किसी महिला को चावल का दान करें।

**कर्क राशि** - ह ए ड

सुबह तड़के गुलाब की पंखुड़ियां डालकर नहाए व दूध का तिलक लगाएं।

**सिंह राशि** - म ए ट

नमक पानी में घोलकर बहाए व 7 दिन तक चांदी धारण करके रहे। शिव पूजा करते रहे।

**कन्या राशि** - प

7 दिन कन्या को खीर या नारियल खिलाए। सफ़ेद वस्त्र धारण करें।

**तुला राशि** - र ए त

7 दिन क्रिस्टल या सफ़ेद मोटी की माला पहनकर रखें। लक्ष्मीजी को बर्फी चढ़ाए।

**वृश्चिक राशि** - न ए य

सात दिन गुलाबी वस्त्र धारण करें। गुलाब का परफ्यूम लगाए और चावल का दान करें।

**धनु राशि** - य ए भ ए फ

काजू वाली बर्फी लक्ष्मीजी को चढ़ाकर सेवन करें। 7 दिन किसी महिला को पैसे दान करें।

**मकर राशि** - ज ए ख ए ग

7 दिन काजू का सेवन करें। महिला को दही का दान करें। क्रीम रंग के वस्त्र पहने।

**कुम्भ राशि** - ग ए स

7 दिन इलाइची.पेपरमिंट वाला मीठा पान। मंदिर में दान करें। किसी महिला को चावल दान करें। चंदन का तिलक लगाए।

**मीन राशि** - द

पानी में चंदन डालकर नहाए। 7 दिन लगातार कोई परफ्यूम लगाए। किसी महिला को दूध का दान करें।

# घर में सकारात्मकता लाने रखें इन बातों का ध्यान

घर में सुख शांति के लिए वास्तु के अनुसार रहन.सहन होना चाहिये। मगर कई बार अनजाने में ही हम कुछ ऐसी गलतियां करते हैं जिससे घर के वातावरण में नकारात्मकता फैल जाती है। इससे कभी.कभी घर के लोगों में क्लेश होता है या उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है।

हमेशा घर की पवित्रता बनाये रखें। इसके लिए जूते.चप्पल को घर के बाहर ही रखना चाहिये। है। जूते.चप्पल पहनकर घर में आना धार्मिक दृष्टि से अशुभ तो होता ही हैए वैज्ञानिक दृष्टि से भी यह अच्छा नहीं होता है। शास्त्रों के मुताबिकए हर घर में एक मंदिर स्थापित होता है। इस स्थान पर रोज पूजा.पाठ करने से दैवीय शक्तियों का वहां वास हो जाता है। ऐसे में इन जगहों पर जूते पहनकर आने से यह स्थान अपवित्र हो जाता है।

रसोई घर में अन्नए जलए अग्नि तीनों होते हैंए जिन्हें हिंदू धर्म में देवता माना गया है। रसोई में जूते या चप्पल पहनकर घूमने से ये देवता नाराज हो सकते हैं। इससे अन्न की देवी अन्नपूर्णा भी नाराज होती हैं और अन्न के भंडार में कमी आती है। वहींए वैज्ञानिक दृष्टिकोण की बात करेंए तो जूतों में कई बैक्टीरिया होते हैंए जो रसोई में पहुंचकर भोजन को दूषित करते हैंए जिससे स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं परिवार के लोगों को हो सकती हैं।

वास्तु शास्त्र के अनुसार भी यदि घर में गंदगी होए तो वहां धन हानि और कर्ज आदि की समस्या बनी रहती है। बाहर पहनने वाले जूते.चप्पलों को जब आप घर के भीतर भी पहनते हैंए तो बाहर की नकारात्मक ऊर्जा घर में प्रवेश कर जाती है। इससे मानसिक तनाव और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो जाती हैं।

घर में यदि आप जूते.चप्पल को इधर.उधर फैलाकर रखते हैंए तो यह भी अच्छा नहीं होता है। माना जाता है कि इससे घर में दरिद्रता का वास होता है। इन्हें व्यवस्थित तरीके से पश्चिम दिशा में रखेंगेए तो नकारात्मक ऊर्जा नहीं रहेगी और शनिदेव की अशुभता से भी बच सकते हैं।